ग्रामीण ज़िंदगी के सुर

पीटर आइज़नहावर

डेविड डेलासी © क्रिएटिव/गेट्टी इमेजेज

कस्बाई और ग्रामीण क्षेत्र अमेरिका का हृदय प्रदेश माना जाता है और हार्टलैंड रॉक जैसी संगीत शैली, हमें यहां के रोजमर्रा के जीवन के सपनों और मुश्किलों से रूबरू कराती है।

अमेरिका के ग्रामीण क्षेत्रों और कस्बों में पले-बढ़े होने का मतलब है अपने शहर, अपनी जगह से जुड़े होने का जबर्दस्त अहसास। आप अपने पड़ोसियों, स्कूल के साथियों, बाज़ार के दुकानदारों, यानी सभी को जानते हैं। लेकिन बाहर की दुनिया की जानकारी बढ़ने के साथ-साथ सत्ता के केंद्रों, अमेरिका के सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव से कटे होने का भाव बढ़ने लगता है। आप को यह भी पता चलता है कि बड़े शहर में 'कस्बे' का आदमी होना कुछ हिकारत की बात मानी जाती है। कुछ ज़्यादा महत्वाकांक्षी किस्म के नौजवान अपने समुदाय की जकड़ से छूटकर शहर में ज़िंदगी बनाने के सपने देखने लगते हैं। इस मनोवृत्ति को एक प्रसिद्ध लेखिका ने अपने कस्बे के बारे में लिखते हुए कुछ यूं व्यक्त किया, ''वह छोड़ आने के लिए बहुत सही जगह थी।''

लेकिन इसके साथ ही ये ग्रामीण क्षेत्र और छोटे कस्बे अमेरिका का हृदय प्रदेश भी माने जाते हैं। माना जाता है कि असली अमेरिका यहीं बसता है जहां लोग आडंबरहीन सीधे-

मोहिंदर सिंह/इमेजेज़ फोटोग्राफिक © क्रिएटिव/गेट्टी इमेजेज

हृदय प्रदेश की ज़िंदगी

मध्य-पश्चिम के कस्बे में बड़े होने का अर्थ था कि हर बार गर्मियों में बाहर खेलो और अंधेरा होने के बाद ही घर लौटो, जब मां आपको बुलाने लगे। इसका अर्थ था बर्फ की गेंद बनाकर झगड़ना और सर्दियों में स्नोमैन बनाना। शरत ऋतु में इसका अर्थ था पूरे दिन पत्तियों को एकत्र करना और फिर उन पर कूदना और दौड़ना। वसंत में इसका अर्थ था कि बास्केटबाल के छल्ले के नीचे ड्राइव वे पर बर्फ के आखिरी टुकड़े के पिघलने की प्रतीक्षा करना जिससे कि ''हॉर्स'' खेलते समय आप गिर न जाएं।

इसका मतलब है कि बिना चारदीवारी वाले पिछवाड़े में दौड़ना। कस्बे में अपनी बाइक हर जगह चलाना, कुत्ते का आपके पीछे-पीछे स्कूल चले आना और स्कूल से वापस जाते समय तक प्रतीक्षा करना। इसका मतलब था मल्फ़र्ड फार्म के खेतों में पारिवारिक पिकनिक। पानी में मिट्टी के गोले फेंकना और जलकुंभी वाले बर्फ जितने ठंडे पानी में नंगे पांव खड़े होना।

इसका मतलब था हर काम परिवार के साथ करना। खाना खाने से लेकर बर्फ को खिसकाने तक, बेसबाल खेलने से लेकर घर की सफाई तक, उत्तरी विस्कांसिन में छुट्टियां बिताने से लेकर गर्मियों में स्टॉर्म खिड़कियों की जगह स्क्रीन लगाने तक।

इसका मतलब था कड़ी मेहनत और खुशियां। लेकिन इसका सबसे बड़ा अर्थ था आज़ादी।

–राजदूत डेविड सी. मल्फ़र्ड, रॉकफ़र्ड इलिनॉय में जन्म।

हेमंत भटनागर

सादे, ईमानदार और बात के धनी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे कस्बों के लोग अपने गांवों-कस्बों पर गर्व करते हैं। कितनी ही परेशानियों और हताशा के बावजूद।

1970 के दशक के उत्तरार्ध में उभरी रॉक संगीत की एक शैली- हार्टलैंड रॉक में इन्हीं भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है। उस दौर के लोकप्रिय संगीतकारों के विपरीत इस शैली के कलाकार बिना तड़क-भड़क, मंच सज्जा और इलेक्ट्रॉनिक ताल वाद्यों की सहायता लिए जीन्स और टी-शर्ट पहने, गिटार बजाते हुए अपनी प्रस्तुतियां देते, ताल देने के लिए परंपरागत रॉक ताल वाद्यों का उपयोग होता। निजी जीवन में भी ये कलाकार लॉस एंजिलिस और न्यू यॉर्क जैसे महानगरों में नहीं, अपने समुदाय में ही रहते थे।

संगीत डेटाबेस ऑल म्यूज़िक गाइड (www.allmusic.com) के अनुसार, ''हार्टलैंड रॉक की आत्मा अमेरिका के सार से समृद्ध रॉक एन रोल था- गैरेज रॉक से अधिक परिष्कृत लेकिन रूट्स रॉक जितना परंपरावादी भी नहीं।''

द ऑल म्यूज़िक गाइड ध्यान दिलाती है कि इस शैली की कृतियों में ''समानता का सूत्र यह मनोवृत्ति थी कि संगीत किसी विषय से जुड़ा होना चाहिए।''

हार्टलैंड रॉक का विषय अक्सर ही ग्रामीण क्षेत्रों के औसत कामगारों के जीवन , सपने और हताशाएं होती हैं। विकिपीडिया (http://en.wikipedia.org/wiki/Heartland rock) की एक एंट्री के अनुसार हार्टलैंड रॉक की केंद्रीय विषयवस्तु एकाकीपन है।

इस शैली के प्रमुख संगीतकारों ब्रूस स्प्रिंगस्टीन, टॉम पेट्टी, जॉन मेलनकैम्प और बॉब सेगर के गीतों में इस एकाकीपन की असंदिग्ध गूंज सुनाई देती है। ब्रूस के ''प्रॉमिस्ड लैंड'' जैसे कई गीत अमेरिका के टूटे सपने की कड़वाहट को व्यक्त करते हैं। ''बॉर्न इन द यूएसए'' की टेक किसी गर्वीले राष्ट्रगान की टेक सी लगती है लेकिन गीत युद्ध से लौटे सिपाही की हताशा के बारे में है। ''नाइट मूव्स'' में बॉब सेगर युवा प्रेमियों के विरह और ''मक्का के खेतों के पार जहां जंगल घना होने लगता है'' प्रणय लीला का गीत गाते हैं। एक और गीत में वह गाते हैं, ''जरा तारों को देखो, कितनी दूर हैं हमसे।''

जॉन मेलनकैम्प का जन्म 19वीं सदी के शुरुआती सालों में दो रेलरोड के संगम पर बसे सेमूर कस्बे में हुआ था। उन्होंने गायन की शुरुआत एक स्थानीय बैंड के साथ की थी। वर्ष 1976 में ब्रिटिश गायक

राजदूत डेविड सी. मल्फ़र्ड और उनकी पत्नी जीनी रूज़वेल्ट हाउस में इटली के कलाकार निकोला सिंबारी के सिल्कस्क्रीन कलर प्रिंट के साथ। इसमें ठेठ मध्य-पश्चिम अमेरिकी दृश्य है- घर के पिछले हिस्से में एक लड़की अपनी बाइक चला रही है, तार पर चद्दरें सूख रही हैं। राजदूत कहते हैं कि यह चित्र देखकर उन्हें लगता है जैसे कि उनकी पत्नी नेब्रास्का के छोटे कस्बे हैस्टिंग्स में एक बच्ची से बड़ी हो रही है।

पॉल हेंटकिन/फोटो रिजर्व इंक. 2006

विली नेल्सन (बाएं) और नील यंग वर्ष 2006 में कैमडेन, न्यू जर्सी में 21वें वार्षिक . फ़ार्मएड कन्सर्ट में।

डेविड बॉबी के मैनेजर ने उन्हें एक रिकॉर्डिंग के लिए बुलवाया। उन्हें ''जॉनी कूगर'' का नाम और गए जमानों के सितारे जेम्स डीन की सी छवि दी गई लेकिन बात जमी नहीं। जॉन इंडियाना लौट आए और अपनी ही रचनाएं रिकॉर्ड करने लगे और अपने संगीत दल के साथ लगातार प्रस्तुतियां देते देशभर में घूमते रहे। वर्ष 1982 में उनका एल्बम ''अमेरिकन फूल'' सबसे लोकप्रिय एल्बम रहा। इसी में ''जैक एंड डायेन'' नाम का हिट गीत था जिसमें ''हृदय प्रदेश के दो अमेरिकी बच्चे'' जीवन के बारे में सपने देख रहे हैं। ''जैक तो फुटबॉल का हीरो बनेगा...।'' जब जैक कहता है कि ''हमें शहर भाग जाना चाहिए'' तो डायेन का जवाब है, ''तुम एकदम सही कह रहे हो, यहां धरा ही क्या है''; गीत की टेक है, ''जीने की मस्ती खत्म हो जाती है, फिर भी ज़िंदगी है कि चली ही जाती है।''

1985 में आए एल्बम ''स्केयरक्रो'' (http://www.youtube.com/watch?v=3eDkAG3R0h8) में अपने गीत ''स्मॉल टाउन'' के वीडियो संस्करण में जॉन ने अपने कस्बे सेमूर के दृश्यों का इस्तेमाल किया है। यह गीत छोटे कस्बों की शान कुछ विडम्बनापूर्ण ढंग से करता है :

मेरे सभी दोस्त छोटे कस्बों के हैं
मेरे मां-बाप भी इसी छोटे कस्बे में रहते हैं
नौकरी भी छोटे कस्बे जैसी ही है,
इसमें अवसर कम ही हैं

लेकिन ऐसा नहीं है कि खुद गायक बड़े शहर में सफल नहीं हो सकता। हो सकता है- आखिर उसने ''लॉस एंजिलिस की गुड़िया से शादी की है।'' लेकिन वह उसे भी कस्बे में ले आया है, ''अपनी ही तरह छोटे कस्बे वाली बनाने को।''

वीडियो की शुरुआत श्वेत-श्याम तस्वीरों से होती है- अपनी ज़मीन को गर्व से निहारते बैठी एक प्रौढ़ जोड़ी, कस्बे की बड़ी सड़क पर कस्बे की पहली मोटरगाड़ियां, किसानों के परिवार, फौजी वर्दी में नौजवान, नए खरीदे मकान के सामने खड़ी युवा जोड़ी, खेलते हुए बच्चे, गेंद से खेलते- अपने संगीत दल के साथ- दोस्तों और परिवार के साथ- खुद जॉन। सभी तस्वीरों में गुज़रे वक्त को मुट्ठी में थामने की ललक दिखती है। सेमूर जैसे कस्बों के अंदरुनी हिस्से अब भी बहुत साफ-सुथरे हैं लेकिन रौनक तो कस्बे के बाहरी छोरों पर बने मॉलों की ओर ही दिखती है।

किसानों और छोटे कस्बों के लोगों पर लगातार बढ़ रहे आर्थिक दबावों को देखते हुए जॉन मेलनकैम्प ने नील यंग, कंट्री और रॉक गायक विल्ली नेल्सन के साथ मिलकर वर्ष 1985 में फ़ार्मएड (www.farmaid.org/) नाम के एक गैरलाभकारी संगठन की स्थापना की जिसका लक्ष्य किसान परिवारों को अपनी जमीन से जोड़े रखना है।

फ़ार्मएड की स्थापना करते हुए उन्होंने सोचा था कि एक कन्सर्ट करेंगे, सहायता राशि बांटेंगे, इस मुद्दे पर जागरूकता बढ़ाएंगे और काम खत्म हो जाएगा। लेकिन आज दो दशक बाद भी अमेरिका में परिवारों द्वारा संचालित फ़ार्म बंद हो रहे हैं, कस्बों के नौजवान शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं और फ़ार्मएड के कन्सर्ट लगभग हर साल हो रहे हैं। फार्मएड किसानों को सहायता देने के लिए पैसे जमा करता है, उन्हें सूचना और ऋण के स्रोतों से जोड़ता है और पारिवारिक फ़ार्मों पर उगाए गए स्वस्थ-पौष्टिक आहार का प्रचार करता है।

वर्ष 2001 में इंडियाना में एक कन्सर्ट से पहले जॉन मेलनकैम्प ने संवाददाताओं को बताया, ''फ़ार्मएड द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही मदद की आवश्यकता बनी हुई है। हम सभी देख रहे हैं कि खेती-बाड़ी का क्या हाल है, छोटे कस्बों में क्या हो रहा है। खेती और छोटे कस्बों पर संकट मंडरा रहा है।''

लेकिन बीते दौर को थामे रखने की ललक अब भी बरकरार है। अपनी किताब *बॉर्न इन द यूएसए- द मिथ ऑफ़ अमेरिका इन पॉपुलर म्यूज़िक फ्रॉम कोलॉनियल टाइम्स टु द प्रेज़ेंट* में टिमोथी ई. शूरर बताते हैं कि ब्रूस स्प्रिंगस्टीन, टॉम पेट्टी, जॉन मेलनकैम्प और बाकी संगीतकारों ने ''बीते जमाने के छोटे कस्बे को एक ऐसी जगह के रूप में देखा है जहां आज भी समुदाय, लोग, स्वतंत्रता और अवसर बने हुए हैं।'' जॉन मेलनकैम्प का गीत है-

मैं भूल नहीं सकता कि मैं कहां से आया हूं
मैं कैसे भूलूं उन्हें जो मुझे प्यार करते हैं
हां, कस्बे में मैं अपनी तरह जी सकता हूं
और लोग मुझे जीने देते हैं
जैसे मैं चाहूं

अपने गृह राज्य इंडियाना की राजधानी इंडियानापॉलिस में सितंबर 2007 में एक फुटबाल मैच से पहले जॉन मेलनकैंप ''स्माल टाउन'' गीत गाते हुए।

शूरर ध्यान दिलाते हैं कि गीतकार ''एक ऐसी जगह, एक ऐसी स्थिति की ओर लौटने की गुहार लगा रहे हैं जो अव्वल तो थी ही नहीं, और अगर थी तो अब संभव नहीं। फिर भी अमेरिका की कल्पना एक अमर गीत है ... यह हममें आशा, गुस्सा, अविश्वास, ललक, गौरव, लज्जा की भावनाएं जगाता है.... इस देश में सबको स्वतंत्रता, समानता और अवसर प्राप्त हैं, इस देश में प्रचुर प्राकृतिक सौंदर्य हैं, और यह ऐसा देश है जिसे अपनी खोज जारी रखनी होगी, एक सच्ची नैतिक दृष्टि पानी होगी, एक ऐसी जगह बनना होगा जहां ''बॉर्न इन द यूएसए'' गाने का सचमुच कोई अर्थ होगा।''

इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।

पीटर आइज़नहावर *नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास में सांस्कृतिक मामलों के फ़र्स्ट सेक्रेटेरी हैं। वह विस्कांसिन के कस्बे वेस्ट बेंड से हैं और रॉक बैंड में भागीदारी कर चुके हैं।*